International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

नागौरजिले केपारम्परिक जल स्त्रोतों का ऐतिहासिक अध्ययन

पदमाराम जाखड़

शोधार्थी भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर

सारांश

राजस्थान राज्य के मध्य स्थित नागौर एक ऐतिहासिक नगरी के रूप मेंअपनी अनुपम धरोहर को संजोये हुए है। ऐतिहासिक काल में नागौर राजनैतिक एवंसामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। समय समयपर विभिन्न शासकों ने इस परशासन किया है और इसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदानदिया है। विभिन्न शासकों ने समय समयपर अनेक निर्माण तथा जीर्णोद्धार केकार्य करवाये थे, इनके द्वारा निर्मित धरोहर आज भी अपने अस्तित्व को बनाये हुएहै। मध्यकालीन नागौर में एक अनूठा जल प्रबंधन देखने को मिलता है। पेयजल कीसमस्या के निवारण के लिए शासकों ने समय समयपर अनेक कुओं, तालाबों,बावड़ियों तथा झालरों आदि निर्माण करवाया, जो आज भी हमें जल प्रबंधन कीप्रेरणा दे रहे है।

संकेताक्षर :–
तालाब ,धरोहर, ऐतिहासिक, नागरिक, जल स्रोत, जल प्रबंधन

नागौर शहर के महत्वपर्णू जल स्रोत –

गिनाणी तालाब

गिनानी तालाब का निर्माण भदाणा के शासक खिंची चौहान गींदा अथवा गालवराज ने नागौर में गींदाणी तालाब का निर्माण करवाया था, माणकराज से लेकर गूंदलराव तक 8 शासकों के नाम दिये, इनमें अंतिम शासक ग्रंदलराव पृथ्वीराज चौहान का सामंत था। गिनाणी तालाब गांधी चौक के त्रिपोलिया दरवाजा पास काजियों के चौक व बाजरवाड़ा मौहल्ले में स्थित है। यह तालाब अर्द्ध चन्द्रमा के आकार का है। इस तालाब पर चार घाट है – दो घाट पश्चिमी दिशा में है, एक घाट दक्षिणी दिशा में, एक घाट उत्तरी दिशा में, जो गाड़ियों से पानी ले जाया जाता था। इनघाटों को क्रमशः नृसिंह घाट, महादेव घाट, कजियों का घाट, घाट सीताराम (जो पूर्वी दिशा में)। इस तालाब में 4 बेरियां है जब कभी–कभी तालाब में पानी की कमीआ जाती थी तो इन कुईयों के पानी का उपयोग किया जाता था।

तालाब की गहराई 46–50 फीट है। तालाब की मिट्टी का रंगभूरा है। तालाब में पानी का लेवल नापने के लिए तीर्थम्भ लगा हुआ है, जिसे स्थानीय भाषा में गोलबंदाकहा जाता है। तालाब का आगौर उत्तर, उत्तर पूर्वी दिशा, दरगाह केपास का क्षेत्रथा। तालाब की ताल पूर्वी दिशा में स्थित है। तालाब में पानी की आवाक को प्रमुख आडो से होती है, एक तो पूर्वी दिशा में खत्रीपुरा दिशा में, एकआड उत्तर पूर्वी दिशा दरगाह वाले क्षेत्र से। यह शहर के परकोटे में स्थित है,तालाब के उत्तरी दिशा में शहर के परकोटे के अवशेष तथा एक बुर्ज भी मिला है। तालाब के उत्तर दिशा में पानी स्रोत झालारा है। तालाब में पेयजल की आपूर्ति 12 माह लगभग रहती थी, लेकिन 1996 के बाद इस तालाब का पानी पीने योग्य नहीं रहा है। तालाब के चारों ओर अनेक मंदिर व मस्जिद बने हुए है, इसतालाब पर साम्प्रदायिक सद्भाव देखने को मिलता है।

शम्स तालाब

नागौर के शासक शम्स खां ने अपने नाम से शम्सी मस्जिद व शम्स तालाबका निर्माण करवाया था।
गुजरात के सुल्तान मुजफ्फरशाह ने 1404 ई. मं अपने छोटे भाई शम्स खां ददानी को नागौर का प्रांतपति नियुक्त किया। शम्स खां के वंशज खानजादा कहलाये थे, शम्स खां का शासनकाल 1404 ई.–1418 ई. तक रहा था। सन् 1570 में मुगल बादशाह अकबर ने राजपूताना के सभी राजाओं को मुगल सल्तनत के अधीन लाने हेतु नागौर में अपना दरबार लगाया था। इस प्रवास के दौरान बादशाह अकबर ने नागौर शहर के तीन तालाबों गिन्नाणी तालाब, शम्स तालाब, शक्कर तालाब की सफाई व जीर्णोद्धार करवाने का आदेश दिया। नागौर के महाराजाधिराज बख्तसिंह के समय इनके बड़े भाई जोधपुर के महाराजा, अभयसिंह द्वारा शम्स तालाब में जलाजंली अर्थात् सूर्य को जल अर्पित किया गया था।तालाब के दक्षिणी किनारे पर स्थित समाधियां भारती समाज के संतों की है। मेघराज भारती की समाधि के ऊपर शिव मंदिर संवत् 1822 में बना है।

वि.सं. 1827 / 1770 ई. तथा वि. सं. 1830 / 1773 में राज्य द्वारा नागौर के अधिकारियों के लिए यह आदेश जारी किया गया कि बख्तसागर, गिनानी, शम्स तालाब एवं झंडा की आडों में मिट्टी वगैरह भर गयी हैं वर्षा के आगमन पूर्व ही मिट्टी निकलवाकर उनकी सफाई करवा लेवे।बड़े पीर साहब की दरगाह में अनेक फारसी में तालाब के दस्तावेज मिले है जो इसकी ऐतिहासिकता को सिद्ध करते है। रियासतकाल में यह तालाब नागौर शहर का महत्वपर्णू जल स्रोत था।

यह तालाब नागौर दुर्ग में पर्वूी दिशा में अजमेरी दरवाजा के पास स्थित है, अजमेरी दरवाजा का अन्य नाम हाथी पोल भी हैं तालाब की लम्बाई लगभग 500–600 मी. तथा चौड़ाई 100–150 मीटर है। इस तालाब पर चार घाट है एक घाट उत्तर दिशा की ओर, दो घाट पर्वू दिशा ओर तथा एक घाट पश्चिमी दिशा की ओर हैं तालाब की पाल पश्चिमी दिशा में स्थित है। तालाब की आगौर अथवा अंगोर दक्षिण–पूर्वी तथा दक्षिण दिशा में स्थित है। शम्स तालाब में पानी की आवक दो आड़ों से होती हैं एक आड पूर्वी दिशा में जिसे चांदनी आड कहा जाता था। दूसरी आड दक्षिणी दिशा में जिसे अंधेरी आड कहा जाता था। इस तालाब की मिट्टी भूरी रेतीली रंग की है। तालाब में पानी की आपूर्ति लगभग 12 माह रहती थी। सन् 1996 की बाढ़ के बाद इस तालाब का पानी गंदा हो गया, जिसके बाद यहां के लोगों ने इसका पानी पीना बंद कर दिया। तालाब में पश्चिमी किनारे पर लाल पत्थर से बनी मैटल दीवार है जिस पर छज्जे लगे हुए है जिसे स्थानीय भाषा में बम्बा कहा जाता है, तथा इन छज्जों को स्थानीय भाषा में टोडी कहा जाता है। तालाब के चारों ओर पक्की दीवार का पट्टा है। तालाब में पानी का भराव अगर ज्यादा हो जाता था तो पानी का निकास दक्षिण–पश्चिम से मानासर की तरफ हो जाता था। तालाब की गहराई लगभग 30 से 35 फीट है। तालाब के दक्षिणी–पश्चिमी दिशा में लाल पत्थर से निर्मित पोलनुमा दरवाजा है, जिसे शम्स तालाब की बारी कहा जाता है।

नागौर शहर के तालाबों की स्थिति

1. *शक्कर तालाब,*
2. *शम्स तालाब*
3. *दुलाया तालाब*
4. *झडा तालाब*
5. *लाल सागर*
6. *बख्त सागर*
7. *प्रताप सागर*
8. *गिनाणी तालाब*

शक्कर तालाब

मुगल शासक अकबर ने ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह की जियारत के बाद अजमेर को छोड़ दिया और 3 नवम्बर 1570 (शुक्रवार 4 जमादीपुल आखिरहि. 978) को नागौर की यात्रा प्रारम्भ की। लगातार 12 दिनों की यात्रा के बाद नागौर 15 नवम्बर 1570 को नागौर पहुंचा। नागौर में दरबार लगाया। 'सम्राट अकबर से यहां के निवासियों से निवेदन किया था कि गांव की समृद्धि यहां के तीन तालाबों पर निर्भर है जहां एक तालाब कायदानी व जिसे गिलानी या गिनानीतालाब कहा जाता था दूसरा शम्स तालाब तथा कुकर तालाब कहलाता है। कालांतर में इन तालाबों में मिट्टी भर जाने के कारण बादशाह ने इनका जीर्णोद्धार करवाया था।

बादशाह अकबर ने आदेश दिया कि फौज के लोग और ओहदेदार(पदाधिकारी) मिलकर अपने–अपने हिस्सों में काम बांट ले और खुदाई का काम शुरु कर दो, थोड़े समय बाद ध्यान करने पर तालाब लम्बा चौड़ा हो गया। और इसतालाब का नाम बदलकर बादशाह ने शूकर तालाब रख दिया।कवि शंकर बारहठ ने तालाब खुदवाया था, तत्कालीन बीकानेर रियासत में कवि शंकर बारहठ को मिले लाख पसाव की पुरस्कार राशि को जनहित में लगाया और चेनार गांव मेंपेयजल की व्यवस्था के लिए तालाब खुदवाया था। तालाब की पूर्वी दिशा की पाल पर शंकर बारहठ की देवलियां बनी हुई है। महाराजा रायसिंह ने संवत् 1651 माघबदी चौथ में बारहठ शंकर बीकानेर के साथ अपनी बहिन का विवाह किया, एककरोड़ रुपये रोकड़ दिया और 25 लाख नागौर को पट्टो दियो।पहले तीन देवलियां थी जिसमें एक देवली 1975 की बाढ में क्षतिग्रस्त हो गयी थी। दो देवलियां आज विद्यमान है। ये देवलियां लाल व सफेद पत्थर की बनी हुई है। दो देवलियों के बीच पीले पत्थर का शिलालेख लगा हुआ है। इस शिलालेख के ऊपरसती व भोमिया की मूर्ति है। इस शिलालेख पर संवत् 1666 लिखा हुआ हैं।

नागौर शहर के पूर्वी दिशा में रोड़वेज बस स्टैण्ड से लगभग 1.5 कि.मी दूरडीडवाना रोड़ चेनार गांव में स्थित है। गांव के बाहर पूर्वी दिशा में स्थित तालाब केबाहर पूर्वी दिशा में स्थित तालाब की लम्बाई 500 मीटर तथा चौड़ाई लगभग 100 मीटर हैं तालाब की गहराई 25–30 फीट हैं तालाब की मिट्टी, कंकड़ सफेद, मूड मिश्रित है। तालाब के चारों ओर पक्के पत्थरों का पट्टा है। तालाब पर छः घाट है। चार घाट पश्चिमी दिशा में, एक घाट उत्तरी दिशा में स्थित है। तालाब काआगौर पूर्वी तथा उत्तर पूर्वी दिशा में है। तालाब में पानी की आवक दो नहरों सेहोती है, जिन्हें स्थानीय भाषा में आड कहते है, यह नहरें उत्तरी तथा पूर्वी दिशा में है। तालाब में पानी की आपूर्ति लगभग 8–9 माह तक रहती है। तालाब का पानी शक्कर अथवा चीनी के समान मीठा है। तालाब में पानी की ढाल दोनों तरफ पूर्व से पश्चिम तथा पश्चिम से पूर्व की ओर हैं तालाब के मध्य में 2 कुएं है। कुओं की गहराई 60–70 फीट है तथा कुओं का व्यास 5 X 5 फीट है।

गर्मियों में पानी की मात्रा तालाब में कम होने पर इन कुईयों से पानी की आपूर्ति की जाती थी, इन कुईयों में पानी की क्षीर शाम को 8 से 9 बजे के बीच आतीथी, इस पानी को डोलियों के माध्यम से निकाला जाता था। तालाब के पश्चिमी किनारेपर जोधपुरी पत्थर से बम्बा अथवा मेटल दीवार है। इस मेटल दीवार से 12 टोडिया बनी हुई है। इन टॉडियों से पानी के चड़स खींचे जाते थे। चड़स का पानी नहर में डाल दिया जाता था। यह बम्बा तालाब के तल से 35–40 फीट ऊंचा बना हुआ है।

तालाब में पानी ज्यादा आने पर पानी का निकास लक्ष्मीतारा सिनेमा के पासहोकर शम्स तालाब की तरफ जाता था।तालाब के मेटल दीवार से एक नहर निकली हुई है। नहर की चौड़ाई 2 फीट है, नहर की गहराई 1.5 फीटहै। यह नहर के तालाब के पश्चिमी दिशा में है।। इस नहर के उत्तरतथा दक्षिण दिशा में अनेक कुएं है, इन कुओं से खेतों बाड़ियों में सब्जी, गेहूँ,सरसों, पान मैथी की फसल उगाई जाती थी। नहर में मीठा पानी होने के कारणयहां से पानी रिसकर खेतों में आता था, कुआं खोदने पर ही मीठा पानी निकलता था, नागौर के शासकों ने मारोठ गांव से हमारे पूर्वजों को सब्जी की खेती तथा तालाब से पानी का चडस खींचने के लिए आज से 500–600 पहले यहां बसायाथा। खेती करने व पानी के चड़स खींचने के लिए कड़लू गांव से हमारे पूर्वजों कोआज से 450–500 वर्ष पहले बरसाया था। शक्कर तालाब से नागौर किले मेंजलापूर्ति की जाती थी। जलपूर्ति के लिए विशेष व्यवस्था से कामदार परनालों सेभरकर जोधपुरी पत्थर से बनी विशेष नाली में डालते थे, नालियों से पानी किले में पहुंचता था।

बख्तासागर तालाब

इस तालाब का निर्माण महाराजाधिराज बख्तसिंह ने एक बड़ी चट्टान पर बख्तासागर तालाब का निर्माण करवाया था।नागौर राज्य में पानी की कमी देखते हुए बख्तसिंह ने नागौर नगर की शहरपनाह के अंदर ही एक विशाल तालाब का निर्माण करवाया था और उसका नाम अपने नाम पर बख्तासागर रखा, जो आज भी नागौर की जनता के लिए कल्याण का साधन है। यह तालाब नागौर शहर के माही दरवाजा से नया दरवाजा की ओर जाने वाले मार्ग है। इस तालाब पर चार घाट है दो घाट पूर्वी दिशा की और दो घाट दक्षिण दिशा की ओर है। तालाब की लगभग गहराई 40–45 फीट तक है। तालाब का तल पथरीला, जिसके कारण पानी की आपूर्ति वर्ष रह सकती है। तालाब कीपाल पूर्वी तथा उत्तर पूर्वी दिशा में है।

तालाब में पानी की आवाक पश्चिमी दिशा तथा उत्तर पश्चिमी दिशा में स्थित है। तालाब की आगोर–पश्चिमी उत्तर–पश्चिमी उत्तर की तरफ है, जहां पर वर्तमान में कोलोनियां बस गयी है। तालाब केबीचों–बीच सफेद निर्मित चबूतरे के निर्माण कार्य के अवशेष मिले है। तालाब मेढाल उत्तर की ओर है। तालाब में कई बेरियां है, जो तालाब में पानी की कमी आ जाने के कारण इनके पेयजल का उपयोग किया जाता था, लेकिन वर्तमान इन बेरियों को बंद कर दिया, तालाब में उद्यान बना दिया गया है। तालाब के किनारे दुर्ग के बुर्ज बना हुआ हैं तालाब के चारों ओर पक्का पट्टे का निर्माण कर दिया है।. इनकी प्राचीन दीवारों में से आने के लिए बड़े–बड़े छेद अथवा छिद्र बने हुए जिनसे बरसात का पानी आता था।

तालाब में अधिकपानी आने पर पानी का निकास –प्रतापसागर तालाब की ओर होता था। सन् 1996 की बाढ़ के बाद से इसका पानी पेयजल के लिए उपयोग नहीं हो रहा है, क्योंकि सिवरेज का पानी इस तालाब में आता है। तालाब के किनारे गणगौर उत्सव पर गणगौर का मेला लगता है चैत्र शुक्ला तृतीया को। इस दिन गणगौर को पानी पिलाया जाता है, यह प्रथा रियासत काल से चली आ रही है। तालाब के किनारे पर एक जैन मंदिर है। इस जैन मंदिर में एक कुआं जो लगभग 200 साल पुराना है। इस कुएं पर चरख लगा हुआ है, यह कुआं लाल पत्थर से बना हुआ है। यह कुआं 150 फीट गहरा है, इसका घेरा 5–7 फीट का है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राज्य प्रशासन के साथ–साथ आमजन ने अपने पेयजल व्यवस्था के लिए जल स्रोतों के निर्माण, रखरखाव, मरम्मत व साफ–सफाई में अपना योगदान दिया है। स्थानीय लोगों द्वारा जल संचयन हेतु कृत्रिम स्रोतों का निर्माण कर जल की प्रत्येक बूंद का व्यवस्थित उपयोग करने विभिन्न विधियां को विकसित किया था जिसके प्रमाण हमें आज भी प्रेरणा दे रहेहै।

इस प्रकार जल संरक्षण के द्वारा प्राकृतिक जल संचयन कर कठिन से कठिनपरिस्थितियों में अपने जीवन में आने वाली पानी से सम्बन्धित समस्या को काफी हदतक हल करते थे। रियासत काल में लोग अपने व अपने पशुओं के लिए वर्ष भर पानी की उपलब्धता को निश्चित कर लेते थे। आमजन के द्वारा पेयजल के स्रोत जैसे – कुओं, तालाबों, नाडी, नाड़ा, बावड़ी का निर्माण बड़ा ही पुण्य का काम माना जाता था। इस कालखण्ड में हमें प्रेरणा मिलती है कि राज्य प्रशासन के साथ–साथ आमजन भी अपने पेयजल व्यवस्था के लिए कितना उत्सुक था, पेयजल की व्यवस्था के साथ–साथ, स्रोत की साफ–सफाई, जीर्णोदार, मरम्मत आदि के अपना दायित्व समझता था। वर्तमान समय हमें भी अपने पूर्वजों से प्रेरणा लेकर जलप्रबंधन का संरक्षण करना चाहिए ताकि भविष्य में कितनी भी विकट परिस्थिति आजाए तो भी जल सहजता से उपलब्ध होसके।

संदर्भ सूची

[1]. 1 गौरीशंकर हीराचंद ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास
[2]. 2 अंसारी, कुरैशी, सिद्धिकी एक इंडियन हिन्दी एण्ड कल्चर
[3]. 3 अबुल फजल अकबरनामा, डॉ. मथुरालाल शर्मा कृति हिन्दी अनुवाद भाग–2
[4]. 4 बांकीदास री ख्यात, पृ. 361
[5]. 5 कुसुम सोलंकी, भारतीय बावड़ियां
[6]. 6 श्याम चौधरी, आर्टिकल राजस्थान पत्रिका नागौर संस्करण, 3 अप्रेल 2017
[7]. 7 चिश्ती एण्ड चिश्ती, नागौर के सूफी संतों का इतिहास, भाग–2